

इतने से मैं रो मत तुम, इतने से मैं छोड़ो मत,
दिन उनका था, रण अपना है, हिम्मत अपनी तोड़ो मत,

तुम धीर धरो, चिंता न करो, एक दिन फिर ऐसा आएगा,
वीर शिवा के घोड़ों ने जैसे मुगलों को रौंदा था,
चीख पड़ेगी मुगल सल्तनत, बस ध्वज अपना लहराएगा।

अपमानो के लोहे से, तलवारों का निर्माण करो,
चोट पड़ी है दिल पे जो, हर चोट पे तुम संग्राम करो,
अर्जुन तनिक ना घबराओ, तुम गांडीव से संधान करो

युद्ध है ये, योद्धा हो तुम, इस बात का तुम पैगाम बनो,
वीर शिवा के वंशज हो तुम, उनकी तुम पहचान बनो,
जिसकी एक ललकार से सबके दिल में हाहाकार मचे,
वीर शिवा के वीर जवानों, उस सेना का ऐलान बनो।

सारी मेहनत, सारी आदत, बस एक क्षण में ही छूट गए,
जिन सपनों को जिया था, वो एक पल में ही टूट गए,
महादेव का काल बनो तुम, काल भी एक विकराल बनो,
स्वर्ग पर गर वो राज करें, तुम असुरों का पाताल बनो,
शिवा कि सम्मान बनो तुम मराठाओं कि तुम ढाल बनो।

आज लहू जो बहा तुम्हारा, कल ज्वाला बन जाएगा,
फिर खुद को भस्म कर के ही वो, लौह कृपाण बन जाएगा,
पर्वत से भी नहीं डरो तुम, मांझी की हुंकार बनो,
महादेव के भक्त हो तुम, उस तांडव के अलंकार बनो
तुम मराठा, तुम पेशवा, शिवा के तुम्हें अहंकार बनो।

अपमानों के तीरों से, जो रण में तुझको भेदा है,
तेरी मां के वीर आंचल के दिल को जिसने छेदा है,
वीर शिवा शमशेर बनो तुम, महादेव के प्राण बनो,
चीर कलेजा, रक्तअर्पण से, मां का तुम अभिमान बनो।
विकट समय है, दृढ़ निश्चय की अभी बहुत दरकार है,
अभी समय है, अभी रुको तुम, बाद में बस जायकारें हैं
पेशवा की बलिदान बनो तुम, उनकी परमार्थ का शान बनो,
जय मराठा, जय पेशवा, जब तक रहो महान बनो,
तुम जब तक रहो महान बनो।

-बिधान आर्य